Dr.Raman Kumar thakur

Assistant professor (Guest)"Department of Economics D.B.College Jaynagar Madhubani.

Class:-B.A. part-1(H.Date:- 03-11-2020. Lecture n.-02.

⁎Topic:- "अल्पाधिकार की विशेषताएं"

:- अल्पाधिकार बाजार की विशेषताएं इस प्रकार से स्पष्ट की जा सकती है :→1) विक्रेताओं की अल्प संख्या।

2) प्रतीकात्मक कार्यवाही ।

3) विक्रय लागत ।

4) कीमत स्थिरता ।

5) मांग वक्र की अनिश्चितता।

⁎ "विंकुचित मांग वक्र(kinked Demand Curve) :→

अल्पाधिकारी

उद्योगों में प्रारंभिक अवस्था में बहुत कीमत युद्ध पाया जाता है । परंतु विभिन्न अल्पाधिकारी फर्मे जैसे -जैसे परिपक्व होने लगती है वे यह अनुभव करती है कि इस कीमत प्रतियोगिता के कारण उन्हें अत्याधिक हानि उठानी पड़ती है। परिणाम स्वरूप उनमें गैर- कीमत प्रतियोगिता आरंभ हो जाती है ।प्रसिद्ध अर्थशास्त्री "स्वीजी " द्वारा प्रदत विंकुचित माँग रेखा की यह संकल्पना निम्नलिखित तीन मान्यताओं पर आधारित है:-

1). अल्पाधिकारी बाजार की समस्त फर्मे परिपक्व अवस्था में हैं। उनका व्यवहार विवेक सम्मत है।

2). यदि कोई अल्पाधिकारी फर्म अपने उत्पादन की कीमत में कमी करती है तो इस बाजार में हमें

सर्वप्रथम या विचार करना है कि अल्पाधिकारी का मांग वक्र क्यों विंकुचित हो जाता है।

3). यदि कोई अल्पाधिकारी फर्म अपने उत्पादन की कीमत बढ़ाती है तो बाजार की अन्य फर्मे इस नीति का अनुसरण नहीं करती ।अर्थात वे अपने उत्पादन की कीमत बढ़ाने के प्रति तत्पर नहीं होता है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि विंकुचित मांग वक्र विश्लेषण की सहायता से अल्पाधिकारी बाजार में कीमत में पाई जाने वाली स्थिरता की व्याख्या की जा सकती है । इस विश्लेषण से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि बाजार में वस्तु की कीमत बिंदु द्वारा प्रदर्शित वस्तुएं स्थिर रहती है परंतु इस विश्लेषण की सहायता से यह स्पष्ट नहीं किया जा सकता है कि अल्पाधिकारी बाजार में कीमत का निर्धारण किस प्रकार होता है । अतः

विंकुचित मांग वक्र विश्लेषण अल्पाधिकारी बाजार में कीमत निर्धारण की व्याख्या नही करता है।वरण इस बाजार में पाई जाने वाली कीमत स्थिरता की व्याख्या करता है ।